बढ़ते कदम

सामूदायिक प्रयासों का संकलन

अपनी बात

सामूदायिक स्वास्थ्य और विकास पर स्थानीय स्वशासी संस्थाओं अर्थात पंचायत और ग्राम सभा पर संस्था द्वारा किये गये कार्य के फलस्वरूप समुदाय में धीरे धीरे दिखायी दे रहे सफल असफल प्रयासों के इस संकलन के पहले पृष्ट के लिए अपनी बात लिखने में काफी खुशी हो रही है। यह एक ऐसी परियोजना है जिसके परिणामों को देखने लिए नजरिया भी अलग चाहिए। सामूदायिक स्वास्थ्य एक बहुत बडा विषय है इस पर कार्य करना भी चुनौतीपूर्ण है। हमने प्रयास किया पंचायतों को स्वास्थ्य जैसे विषय से जोडने और मुख्य स्वास्थ्य कार्यक्रम जैसे टीकाकरण, पेयजल, स्वच्छता आदि पर पंचायतों की भूमिका स्पष्ट करने पर। भारतीय ग्रामीण परिवेश में स्वास्थ्य और पंचायतों पर किये गये दो वर्ष के कार्य कोई मायने नहीं रखते क्योंकि यदि पंचायतों और ग्रामसभाओं की बात करें तो दोनों व्यवस्थाएं अभी भी अपनी शैशव काल में हैं। पंचायत प्रतिनिधि ! जिसमें सिर्फ सरपंच केंद्रीय भूमिका में हैं और वे भी नौकरशाही के मकडजाल में फंसे हुए हैं, ग्रामसभाओं का होना ना होना कोई मायने नहीं रखता। ऐसी परिस्थति में परिवर्तन के छोटे छोटे प्रयास भविष्य में बडे बदलाव के संकेत देते हैं।

इसी दिशा में कम्युनिटी डेव्हलपमेंट सेंटर ने वर्ष पूर्व सर दोराबजी टाटा ट्रस्ट मुम्बई के सहयोग से सामूदायिक स्वास्थ व विकास के मुद्दों को लेकर दो विकासखण्ड; वाराशिवनी और लालबर्रा की 12 पंचायतों में कार्य प्रारंभ किया, वाराशिवनी विकासखंड में स्वास्थ्य संरक्षक समिति, सी.डी.सी की सहयोगी संस्था के रूप में कार्य कर रही है।

परियोजना में विभिन्न विषयों पर जानकारियों के प्रचार प्रसार, सामूदायिक संपर्क, प्रशिक्षणों के माध्यम से समुदाय को जागरूक और अपने अधिकारों जिसमें मुख्यत: स्वास्थ्य अधिकारों के प्राप्ति हेतु कार्य किया जा रहा है, इन प्रयासों के फलस्वरूप बदलाव के कुछ संकेत परियोजना क्षेत्र में दिखायी दे रहे हैं। इन प्रयासों को परियोजना स्टॉफ ने संकलित करने की कोशिश की है जिसे एक किताब के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। आशा है इस संकलन का लाभ समुदाय को प्राप्त होगा। मैं परियोजना में कार्यरत सभी स्टॉफ को इस संकलन पर बधाई देना चाहता हूँ जिन्होंने समुदाय में दिख रहे बदलाव को करीब से देखा और कलमबद्ध किया है।

शुभकामनाओं सहित!

अमीन चार्ल्स

निदेशक

कम्युनिटी डेव्हलपमेंट सेंटर

अनुक्रमणिका

- पलायन ! अब और नही [5]
- सूचना से अधिकार [6]
- ग्रामसभा से पहली मुलाकात [7]
- स्वास्थ्य व स्वच्छता [8]
- अब होती है ग्राम सभा [9]
- सूनिश्चित हुई टीकाकरण सुविधाएं [10]
- बच्चों के प्रयास [11]
- स्वास्थ्य समिति की पहल [12]
- सूचना का अधिकार : प्रयोग सीखते ग्रामीण [13]
- ग्रामसभा में उठे सामूदायिक स्वास्थ्य के मुद्दे [14]
- सभी के पास है जॉब कार्ड [15]
- समूह की महिलाओं ने ठीक कराया हेंडपंप [16]
- स्कूल के बच्चों ने छोडा व्यसन [17]
- अंततः समूह बन गया [18]
- नुक्कड नाटक से मिली प्रेरणा [19]
- आयोडीनयुक्त नमक : उपयोग पर बनी समझ [20]
- श्रमदान [21]
- समूह ने किया सूचना के अधिकार का प्रयोग [22]
- जय हो ! आर.. टी. आई. की [23]
- शालेय स्वास्थ्य गतिविधि का प्रभाव [24]
- यहॉ है रोजगार की ग्यारंटी [25]
- स्वास्थ्य समिति का छोटा प्रयास [26]
- जरूरत है जागरूकता की [27]
- आखिर मेरा कसूर क्या है ? [28]

निर्देशन

: अमीन चार्ल्स

परिकल्पना संकलन

: हेमन्त श्रीवास

सहयोग

: जीवनदास झारिया, वंदना चार्ल्स
: महेश डहाटे त्रिवेणी बिसेन
: नरेश लॉजेवार, नजमून निशा

Community Development Centre
Opposite Maharishi Vidya Mandir,
Near Lodhi Hostel, Bhatera, Balaghat
M.P. 481 001 India
Phone : 09406720690, 09425822228
Email : cdcindia@rediffmail.com
Website : www.cdcmp.org

पलायन ! अब और नहीं

ग्राम टेकाडी में लोगों के रोजगार की स्थिति दयनीय है क्योकि पिछले 1 साल से यहॉ कोई भी रोजगार पंचायत द्वारा उपलब्ध नहीं कराया गया था । जिससे इस ग्राम में पलायन की स्थिति बन गई थी जिसमें 12 परिवार में पलायन भी कर चुका था इस ग्राम में जब लोगों से बात कही गई तो सिर्फ 4 दिन का काम जो पिछला काम था वह हुआ उसके बाद कोई भी काम नहीं हुआ।

इस बारे में जब वहॉ की सरंपच श्रीमती इंदिरा टेकाम से बात की गई तो उन्होने कहॉ कि कोई भी काम की मांग को लेकर आवेदन नहीं लगाता हमने आवेदन लगाने सभी को कहा है फिर भी आवेदन नहीं लगाया जाता तो हम क्या कर सकते हैं । इसके बाद जब हम समुदाय से बैठक के दौरान पूछे की काम की आवश्यकता है या नही, तो उसमें कुछ महिलाओं ने कहा की हमें काम की आवश्यकता है क्योकि यहॉ जीविका का साधन कुछ भी नहीं है एवं वहॉ उपस्थित पुरूषों का भी यही कहना था तभी वहा उपस्थित एक व्यक्ति राजू ने हमें गॉव की सम्पूर्ण स्थति से अवगत कराया ।

इस चर्चा के बाद रोजगार गारंटी योजना की जानकारी देते हुये उन्हें इस योजना से लाभ लेने का तरीका बताया एवं उनसे आवेदन लगाने की चर्चा की तथा 15 दिन के अन्दर काम न मिलने पर बेरोजगारी भत्ता की जानकारी दी । जिसके पक्ष में कुछ महिलाओं ने आवेदन न होने की जानकारी दी जिसमें उन्हें वहा 50 आवेदन दिये गये और इस आवेदन को भरकर पंचायत में देकर पावती लेने को कहा और उस ग्राम में एक दिन के अन्दर 50 आवेदन लगे ।

इसके बाद जब हम 10 दिन बाद उस ग्राम में पहुचे तो पता चला की गॉव में कोई भी व्यक्ति नही हैं पूछने पर पता चला की सभी गॉव को लोग काम में गये हैं जब हम कार्यस्थल पर पहुचे तो वहॉ लगभग 150 लोग तालाब सुधारीकरण के कार्य में लगे थे । इस प्रकार लोगों को रोजगार उपलब्ध हुआ। और जब मजदूरों से हमने बातें की तो उन्होंने कुछ दिन का ही काम बताया तो उन्हें फिर से आवेदन लगाने की सलाह दी गई । आज की स्थिति यह है कि उस ग्राम में नियमित रूप से आवेदन लगाये जा रहे हैं और काम खुल रहा है ।

हेमन्त श्रीवास

दस्तावेजीकरन समन्वयक

सूचना से अधिकार

ग्राम पंचायत टेकाडी के कटंगटोला में स्वयं सहायता समूह की बैठक में चर्चा के दौरान श्रीमती पुस्तकला बाई ने अपनी समस्या सबके सामने रखी, उसने बताया उनके जीवन यापन के लिए किसी भी प्रकार का कोई साधन नहीं है और उनके पास कृषि योग्य भूमि भी नहीं है जिससे की वह अपना और अपने बच्चों का पेट पाल सके। उनकी एक मुख्य समस्या है कि गरीबी रेखा की सूची में उनके परिवार का नाम ही नहीं है। जिसके कारण उन्हें बाजार से राशन खरीदना पड़ता है जिसमे वह असमर्थ है। उन्होने बताया की गरीबी रेखा का राशन कार्ड बनाने हेतु पंचायत में आवेदन लगाया था परन्तु आज तक कोई भी जानकारी नहीं दी गई पूछनें पर कहते है की आवेदन तहसीलदार के पास है हस्ताक्षर होने गया है। जबकी यह आवेदन अक्टूबर 2008 में लगाए गए थे। सरपंच से बार–बार राशन कार्ड बनाने कहा गया परन्तु आज तक कोई भी कार्यवाही नहीं हुई।

लगभग दो माह बाद उस ग्राम के कोटवार ने उस महिला को बताया की उनका राशन कार्ड बन चुका है, लेकिन हस्ताक्षर करने के लिए तहसीलदार रूपए मॉग रहा है। तब पुस्तकला बाई ने कहा की वो कैसे रूपए दे मुझे तो पता भी नहीं कि मेरा नाम वहॉ गया भी है या नही ? तभी संस्था कार्यकर्ता को इस बारे में जानकारी मिली और उसने महिला को बताया गया की वह सूचना के अधिकार के माध्यम से इसकी जानकारी मॉग सकती है की मेरा नाम गरीबी रेखा में है या नहीं ? और उस महिला को सूचना के अधिकार अधिनियम की पूर्ण जानकारी दी गई, साथ ही उस महिला से आगे भी बार–बार मिला गया परन्तु उन्होने आवेदन नहीं लगाया। उसे डर था की यदि वह आवेदन लगाएगी तो सरंपच से बुरी हो जाएगी। परन्तु उसे बार–बार समझाया गया कि यह उसके अधिकार का विषय है ना कि संबधों के बिगडने का जिससे अंततः वह आवेदन लगाने तैयार हुई। जब पुस्तकला बाई जैसे ही आवेदन लेकर तहसील कार्यालय पहुची वहॉ पर वही कोटवार मिल गया और वह आवेदन लगाने से मना करने लगा परन्तु वह महिला नहीं मानी और उस महिला ने आवेदन लगाया और पावती भी लिया। लगभग 10 दिनों बाद उसे सूचना प्राप्त हुई कि उसका नाम गरीबी रेखा की सूची में है साथ ही उसे उनके राशन कार्ड का नम्बर भी बताया गया। कुछ दिनों बाद राशन कार्ड़ वितरण की बात कही गई और राशनकार्ड प्राप्त भी हुआ। जिससे अब पुस्तकला बाई को राशन की दुकान से किफायती मूल्य में राशन प्राप्त होने लगा है।

ग्रामसभा से पहली मुलाकात

लालबर्रा ब्लाक के साल्हे गॉव मे सी डी सी कार्यकर्ता द्वारा सृजन समूह की बैठक रखवाई गई जब बैठक लेने ग्राम साल्हे पहुचें तो ग्राम सचिव के माध्यम से पता चला कि आज ग्राम साल्हे मे जल अभिषेक अभियान के लिये ग्राम सभा में आमंत्रित किया गया है सचिव की ओर से हमें ग्राम सभा में बुलाया गया। पहले तो हमने सृजन समूह की बैठक ली एवं सृजन सदस्यों को ग्राम सभा में चलने के लिये कहा गया लेकिन वे लोग ग्राम सभा के बारे में जानते नही थे एवं ग्राम सभा में जाने से डर रहे थे वे कहते है की ग्राम सभा में बच्चो का क्या काम फिर हमने उन्हें बताया कि किसी भी ग्राम के स्त्री व पुरूष जो 18 वर्ष के हो चुके हैं ग्राम सभा के सदस्य होते हैं और वे ग्राम सभा में जा सकते हैं। साथ ही अपनी या अपने ग्राम की समस्यायें रख सकते हैं तब वे हमारे साथ ग्राम सभा में चलने के लिये तैयार हो गये।

वहॉ लगभग एक घंटा ग्राम सभा की प्रक्रिया देखते रहे ग्राम सभा में जल अभिषेक अभियान के कर्मचारी द्वारा जानकारी दी गई कि हमारे देश में जल स्तर हर साल कम होता जा रहा है। जो आगे चलकर हमारे लिये पीने के पानी की समस्या बन सकती है। अतः हमे बारि"ा के पानी जगह जगह पर रोकना है जो रिस कर जमीन में जायेगा जिससे जमीन का जल स्तर बढेगा। इसके साथ ही ग्राम के कई लोगों ने अपनी समस्यायें रखे फिर हम लोग वापिस आये एंव सृजन समूह सदस्यों के साथ ग्राम सभा के अनुभव पूछे उन्होने बताया कि ग्राम सभा में जाने से उनको बहुत सारी जानकारी मिली और अब आगे से हम लोग ग्राम सभा में जायेंगे तथा अपनी समस्या ग्राम सभा मे रखेंगे हमने उन्हें समझाया कि आप लोग अपने साथ अपने परिवार के लोगों साथ ही मोहल्ले के लोगों को भी ग्राम सभा मे लाने का प्रयास करेगें इस प्रकार सृजन समूह के सदस्यों की ग्राम सभा पर समझ बनी ।

त्रिवेणी बिसेन

स्वास्थ्य व स्वच्छता

मुख्य सड़क मार्ग कटंगी से लगभग 3 किमी. की दूरी पर ग्राम बोटेझरी है। ग्राम की कुल जनसंख्या 2510 है। ग्राम छोटा होने के बावजूद यहां सभी प्रकार की जाति व धर्म के लोग निवास करते है। यहॉ कि यह विशेषता अनेकता में एकता का एक अनूठा उदाहरण प्रस्तुत करती है यहॉ निवासरत लोगों के आजीविका का प्रमुख साधन कृषि है।

इस ग्राम में एक प्राथमिक तथा एक माध्यमिक शाला है जिसमें लगभग 105 बच्चे शिक्षा प्राप्त करते है। यहा संस्था स्वास्थ्य संरक्षक समिति के कार्यकर्ता द्वारा शालेय स्वास्थ्य गतिविधि के अन्तर्गत प्रतिमाह बच्चों को शारीरिक स्वच्छता, परिसर स्वच्छता व शुद्धपेयजल पर प्रतियोगिता व समझाइश के माध्यम से जानकारी दी जाती है। बच्चों को समझाया गया कि किस प्रकार हाथों की सफाई से विभिन्न प्रकार की बीमारियों से बचा जा सकता है। जिसका परिणाम यह निकलकर आया कि बच्चे नियमित भोजन करने के पूर्व साफ पानी व साबुन से हाथ धोते है। एक कतार में आगे बढ़कर भोजन लेते है। सप्ताह में एक बार शालेय परिसर में फैला हुआ कचरा व बेकार चीजों को चुनकर कचरा डिब्बा में जमा करते हैं, या उस कचरे को उचित स्थान पर जला देते हैं।

ऐसा माहौल एवं स्वच्छ वातावरण पहले यहां नहीं था। एवं अनुशासन की कमी थी। जिसके कारण आये दिन बच्चों का स्वास्थ्य खराब रहता व बच्चे प्रतिदिन स्कूल भी नहीं आते थे, किन्तु पहले व आज की स्थिति भी यहां काफी अंतर आ चुका है। अब बच्चें नियमित स्कूल आते है तथा उनका स्वास्थ्य भी ठीक रहता है। यह शालेय स्वास्थ्य गतिविधियों का ही परिणाम है।

नरेश लॉजेवार

अब होती है ग्राम सभा

ग्राम पंचायत कोचेवाही में ग्राम सभा होती थी पर समुदाय की उपस्थिती नही रहती थी। तथा लोगों में जागरूकता नही थी इस संबंध में ग्राम स्वास्थ्य समिति अध्यक्ष अमृतलाल मानेश्वर तथा सदस्य डोमाजी नागेश्वर तथा ग्राम के गणमान्य लोगों ने मिलकर सरपंच श्रीमती कौतिका मर्सकोले से चर्चा की तब उन्हें कहा कि ग्राम के लोगों से मिलकर ग्राम सभा का महत्व बताये तथा उन्हें ग्राम सभा में आने के लिए प्रेरित करे, जिससे वे ग्राम सभा में आये तथा ग्राम सभा के महत्व को समझे।

इनके द्वारा किए गए सामूहिक प्रयास से आज ग्राम सभा में लोग आने लगे है। ग्राम सभा में पूर्व सरपंच महोदया द्वारा ग्राम में मुनादी कर दी जाती है। ग्राम सभा में समुदाय की उपस्थिति बढ़ने से, शासन द्वारा संचालित योजनायें रोजगार गारण्टी योजना, सूचना का अधिकार, तथा पेंशन में भी आवेदन लग रहे है। तथा समुदाय को इसका महत्व समझ आने लगा है।

नरेश लॉजेवार

सुनिश्चित हुई टीकाकरण सेवाएं

ग्राम पंचायत नांदगांव आदिवासी बाहुल्य है। यह ग्राम चारों ओर जंगलों से घिरा हुआ है। तथा यहा आवागमन के लिए पक्की सड़कें नहीं है। बरसात के दिनों में ग्रामवासियों को अपनी दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए संघर्ष करना पड़ता है। क्योंकि मुख्य सड़क मार्ग पर आने के लिए ग्रामवासियों को तीन नालों को पार करना पड़ता है। यहां के लोगों का आजीविका की मुख्य साधन जंगली वनस्पति व कृषि भूमि ही है।

नांदगांव ग्राम में दो आंगनबाड़ी केन्द्र हैं। एक नांदगांव तथा दूसरी बीजाटोला में, दोनों आंगनबाड़ी केन्द्रों का टीकाकरण ग्राम पंचायत नांदगांव में किया जाता है। उपस्वास्थ्य केन्द्र भी पंचायत के निकट ही है। टीकाकरण पहले मंगलवार को किया जाता है किन्तु ग्रामवासियों की टीकाकरण के प्रति जागरूकता नहीं होने के कारण ए.एन.एम. की सक्रियता के बावजूद, टीकाकरण 100 प्रतिशत नहीं हो पाता था। इस सम्बंध में संस्था कार्यकर्ता, आंगनबाड़ी कार्यकर्ता व ए.एन.एम. तथा सृजन समूह के साथ मिलकर घर–घ ार भेंट कर समुदाय में टीकाकरण के प्रति जागरूकता लाई गई। इस प्रकार किए गए नित्य प्रयासों से समुदाय में टीकाकरण के महत्व को लेकर जागरूकता आने लगी, तथा टीकाकरण के स्तर में सुधार आने लगा। जिसका यह परिणाम निकला कि नांदगांव में हर माह 100 प्रतिशत टीकाकरण कार्यक्रम सम्पन्न किया जा रहा है कोई भी हितग्राही अब टीकाकरण के लाभ से वंचित नहीं होता

नरेश लॉजेवार

बच्चों के प्रयास

नांदगांव और नगझर के बच्चे नांदगांव माध्यमिक स्कूल में ही शिक्षा प्राप्त करते हैं। शालेय स्वास्थ्य गतिविधियों के अन्तर्गत स्वास्थ्य संरक्षक समिति द्वारा माध्यमिक स्कूल नांदगांव में स्वच्छ जल व पीने के साफ पानी के बारे में बच्चों को समझाया गया, तथा यह भी बताया गया कि किस प्रकार दूषित जल में क्लोरीन की गोली व ब्लीचिंग पाऊडर का उपयोग कर उसे साफ पीने योग्य बनाया जा सकता है तथा जल जनित बीमारियों से बचा जा सकता है।

शालेय स्वास्थ्य सत्र के पश्चात् बच्चों को यह बताया गया कि आप अपने परिवार व पास–पड़ोस में भी पीने के साफ पानी का उपयोग तथा इसे किस प्रकार साफ किया जा सकता है क्लोरीन व ब्लीचिंग के माध्यम से यह समझाने के लिए कहा गया। बच्चों द्वारा इस सम्बंध में पूरी निष्ठा से कार्य किया गया। जिसका परिणाम यह निकला कि समुदाय द्वारा आंगनबाड़ी व उपस्वास्थ्य केन्द्र से स्वतः ब्लीचिंग व क्लोरीन गोली को पीने के साफ पानी के लिए मांग की जाने लगी। बच्चों के इन प्रयासों के फलस्वरूप ग्राम में जल जनित बीमारियों में कमी आ रही है।

नरेश लॉजेवार

स्वास्थ्य समिति की पहल

वारासिवनी विकासखण्ड से लगभग 15 किमी. की दूरी पर रमरमा ग्राम है। आवागमन के लिए यहां पक्की सड़क नहीं है। ग्राम के लोगों की जीविका का मुख्य साधन कृषि भूमि व मजदूरी है। क्षेत्र में मेगनीज माइंस का होना इस क्षेत्र को एक अलग पहचान देता है।

नगझर रोड़ पर बसे टोले पर हेडपम्प है। वहां मोहल्ले के वासियों द्वारा हेडपम्प के पास जानवरों की धोया जाता तथा महिलाओं द्वारा वही पास में गंदे कपड़े धोये जाते थे, तथा इसी हेडपम्प से मोहल्ले में सभी परिवार द्वारा पीने का पानी उपयोग किया जाता था। मगर गंदे पानी की निकासी कि सही व्यवस्था न होने के कारण वहां हेडपम्प के आस–पास हमेशा गंदगी बनी रहती थी।

इस सम्बंध में हमने ग्राम की स्वास्थ्य समिति की बैठक में यह बात रखी तथा यह समझाया की किस प्रकार हेडपम्प के आस–पास गंदगी बनी रहती है। अतः वहां अगर स्वास्थ्य समिति द्वारा सोख गड्ढा बना दिया जाय तो, गंदे पानी का निपटारा उचित प्रकार से हो जायेगा तथा वहां गंदगी भी नहीं रहेगी। स्वास्थ्य समिति की बैठक में सभी सदस्यों द्वारा इस विषय पर विचार किया गया तथा फैसला लिया गया कि वहां सो ख गड्ढा बन जाए तो बहुत अच्छा होगा। इस प्रकार वहां स्वास्थ्य समिति द्वारा सोख गड्ढा निर्माण करवाया गया सोखता गडढ़ा बनने से वहां जो गंदगी होती थी वह होना बंद हो गई तथा पानी का सही निपटारा भी होने लगा।

स्वास्थ्य समिति के सदस्य अपने इस काम से स्वयं में गौरव महसूस करते हैं और अपनी समिति को इसी तरह सक्रिय बनाये रखना चाहते हैं।

नरेश लॉजेवार

सूचना का अधिकार : प्रयोग सीखते ग्रामीण

ग्राम पंचायत धारावासी के ग्राम मौसमी के सृजन केन्द्र पर सृजन समूह की बैठकों में संस्था कार्यकर्ताओं के द्वारा समूह के सदस्यों को सूचना के अधिकार एवं भोजन के अधिकार के संबंध में जानकारी बताई गई थी। जब सृजन केन्द्र के सदस्य राधेश्याम हनवत ने अपने गांव के लोगों को सूचना के अधिकार के संबंध में और इस अधिकार के तहत् मिलने वाली जानकारियों के संबंध में बताया, तो गांव के भूमेश्वर पारधी ने अपनी पंचायत में सूचना के अधिकार के तहत् आवेदन लगाया जिसमें पंचायत से माह दिसम्बर 2007 में ग्राम मौसमी एवं केवाटोला के बीच बने पुल निर्माण कार्य के लिये कितनी राशि प्राप्त हुई थी। स्वीकृत राशि का उपयोग कहॉ पर किया गया। निर्माण कार्य कितनी राशि खर्च हुई और कितनी राशि शेश है, अर्थात पुल निर्माण कार्य का आय व्यय ब्यौरा प्राप्त करना चाहा।

ग्राम पंचायत सचिव व सरपंच ने आवेदन देखकर ही भूमेश्वर पारधी को सारी जानकारी उपलब्ध करा दी। इस बात की जानकारी गांव के अन्य लोगों धनसिंह राणा, जीवन यादव, सन्तोष भोयर को भी लगी और गांव के लोगों ने इस अधिकार के प्रभाव को समझा तो इस सूचना के अधिकार के विषय में और अधिक विस्तृत जानकारी प्राप्त करना चाहा और सृजन केन्द्र के सदस्यों से सम्पर्क करना एवं जानकारी प्राप्त करना प्रारम्भ कर दिया। संस्था ने सृजन केन्द्रों को इस अधिकार से संबंधित सभी जानकारियॉ व संदर्भ सामग्री उपलब्ध करायी है जिसका लाभ ग्राम समुदाय को प्राप्त हो रहा है।

महेश डहाटे

ग्रामसभा में उठे सामूदायिक स्वास्थ्य के मुद्दे

विकासखंड लालबर्रा से 08 किलामीटर की दूरी में ग्राम पंचायत रानीकुठार है जहॉ पर चौपाल परियोजना के अंतर्गत सृजन केन्द्र बनाया गया है। यहां नियमित रूप से बैठकों का आयोजन किया जाता है। जिसमें शौचालयों की आवश्यकता और शौचालय ना होने से पैदा होन वाली समस्याओं, गॉव की स्वच्छता आदि पर सृजन केन्द्र के सदस्यों के द्वारा समय समय पर विचार विमर्श किया जाता है।

गॉव के स्कूल के पास हेंडपंप है जहॉ पर स्कूल एवं आंगनवाड़ी के बच्चों के द्वारा इसका उपयोग किया जाता है हेंडपंप के आसपास बच्चों के द्वारा पानी के उपयोग के कारण पानी बाहर गली में बहता है जहॉ पर छोटे छोटे बच्चे खेलते है। इन बच्चों को गंदे पानी से होने वाले अनेक त्वचा संबंधी रोग होने की सम्भावना बढ़ जाती है। इन्हीं बातों को ध्यान में रखते हुये ग्राम पंचायत रानीकुठार में 26 जनवरी 2008 को ग्राम सभा की बैठक में सृजन केन्द्र के द्वारा प्रस्ताव रखा गया जिसमें तीन मांगे महत्वपूर्ण थी शौचालय निर्माण, हेंडपंप के दूषित पानी हेतु सोखपीट और कुओं की साफ सफाई।

इन्हीं मांगों के उपर ग्राम सभा में चर्चा की गई पंचायत के द्वारा समय पर कार्य की शुरूआत नहीं होने के कारण हेंडपंप के सामने ही रहने वाले श्री पन्नालाल गौतम सृजन केन्द्रों के सदस्यों के द्वारा संयुक्त प्रयासों से सोखपिट निर्माण की प्रकिया को आगे बढ़ाया गया। जिसका निर्माण पूर्ण हो चुका है। इस पूरी राशि का व्यय श्री पन्ना लाल गौतम के द्वारा किया गया। पंचायत की बैठक में निर्णय लिया गया की श्री पन्ना लाल गौतम के द्वारा किया गया खर्च का भुगतान पंचायत के द्वारा किया जायेगा।

महेश डहाटे

सभी के पास है जॉब कार्ड

लालबर्रा विकास खण्ड की 6 पंचायतो धारावासी रानीकुठार, टेकाडी साल्हे चीचगॉव एंव बहियाटीकुर में संस्था सी. डी. सी. बालाघाट द्वारा चौपाल परियोजना का कियानवयन किया जा रहा है, संस्था द्वारा इन पंचायतों में समुदाय के साथ मिलकर सामुदायिक स्वास्थ्य एंव विकास की प्रक्रिया से गरीब व कमजोर वर्ग के लोगों को जोड़नें एंव उन्हें अपने हक एंव अधिकारों पर जागरूक बनाने का प्रयास किया जा रहा है, एंव समय समय पर अनेक कार्यक्रमों एंव गतिविधियों का आयोजन किया जाता है। ग्राम पंचायत धारावासी के ग्राम मानूटोला में कुल 86 परिवार निवास करते है, जिसमें, अनुसूचित जन जाति के 61 अनु. जाति के 02 तथा अन्य पिछडा वर्ग के 23 परिवार के लोग निवास करते है, गांव में अधिकाश लोगों का जीवन स्तर गरीबी रेखा के नीचे का है, लोग अपनी आजीविका निर्वहन, कृषि मजदूरी तथा वनों का दोहन करके करते है, तथा कुछ समय के लिए पलायन भी करते है।

माह नवम्बर 2008 में वार्ड पंच श्री गौरीशंकर उइके के सहयोग से वार्ड सभा का आयोजन किया गया। बैठक का मुद्दा था रोजगार ग्यारन्टी योजना एंव कार्य का प्रावधान । योजना में काम हेतु आवेदन करने के लिए जाब कार्ड का होना आवश्यक होता है।

गांव में ऐसे परिवारो लोगो को चिंहित किया गया जिनके पास जाब कार्ड नहीं है, गॉव में ऐसे 5 परिवार निकले जिनके पास जाब कार्ड नहीं था (1) जगदीश/ठेमन सिंह (2) ठुानाजी / गोसाराम (3) आलम सिंह पूनाजी (4) अन्तराम /बोहरनसिंह (5) ब्रजलाल /गोमाजी। इन परिवारों से संस्था कार्यकताओं द्वारा सम्पर्क कर जॉब कार्ड नहीं मिलने का कारण पूछा गया तो बताया गया की किसी परिवार ने पंचायत में फोटो नहीं दिया तो किसी का मुखीया जाब कार्ड पंजीयन के समय बाहर गया था तो किसी को इसकी उपयोगिता पर समझ नहीं थी अतः बनवाया ही नहीं। क्योंकि आज तक इसकी आवश्यकता ही नही पड़ी।

इन परिवारो को जानकारी दी गयी कि राष्ट्रीय रोजगार ग्यारन्टी योजना में आपको 100 दिन का काम इसी जॉब कार्ड के आधार पर मिलेगा और आपके पास कार्ड नही है, तो नही मिलेगा तथा विषय की गम्भीरता को संस्था कार्यकताओं द्वारा समझाया गया। लगातार इन परिवारों से सम्पर्क बनाये रखा

और बार बार उन्हें जाब कार्ड बनवाने की सलाह दी गई क्योंकि ये परिवार कार्ड बनवाने के लिए अपने एक दिन के काम का नुकसान करना पड. रहा था और वर्तमान में तुरन्त कोई फायदा नहीं था, अतः कार्ड बनने मे उत्सुकता कम थी, किन्तु उन्हें निरन्तर परामर्श द्वारा समझ बनाई गई तब सभी अपने पंचायत सचिव श्री गुलाब सिंह तेकाम को जाब कार्ड बनवाने हेतु आवेदन एंव अपने–अपने फोटो दिये और एक सप्ताह के अन्दर अपना जाब कार्ड बनवा लिया इस प्रकार अब बन गये और समय समय पर राष्ट्रीय रोजगार ग्यारन्टी योजना में काम के लिए आवेदन देकर काम प्राप्त कर रहे है !

महेश डहाटे

समुह की महिलाओं ने ठीक करवाया हेण्डपम्प

ग्राम पंचायत रानीकठार विकास खण्ड मुख्यालय से लगभग 12 कि0 मी0 अन्दर वनों से लगा हुआ गांव है, गांव में पीने के पानी के लिए 3 हेण्डपम्प के एंव 1 सार्वजनिक कुआं है, गांव के लोग इन्ही हेण्डपम्प एंव कुंए के पानी का उपयोग करते हैं ।

माह मई 2008 में गांव का एक हेण्ड पम्प खराब हो गया और इस हेण्ड पम्प के पानी का उपयोग लगभग 30 से 40 परिवार के लोग करते हैं। हेण्डपम्प खराब होने से इन परिवारों को पीने के पानी के लिए गांव के दूसरे हेण्ड पम्प जाना पड़ता था जो अधिक दूरी पर था । हेण्ड पम्प सुधारवाने के लिए अपने पंचायत के सचिव श्री विजय ऐडे को मौखिक बताया गया और हेंण्ड पम्प सुधरवाने हेतु निवेदन किया गया किन्तु 15 दिन तक भी हेण्डपम्प नही सुधरवाया गया। इसी दौरान गांव में सन्तोषी स्व सहायता समूह की बैठक का अयोजन किया गया, और इसी बैठक में संस्था कार्यकर्ता भी सम्मिलित हुये, बैठक में समूह की महिलाओं ने उक्त बिगड़े हेण्डपम्प के सम्बंध मे चर्चा की कि यह ठीक कैसे होगा। संस्था कार्यकर्ता से इस विषय पर राय ली गई तब संस्था कार्यकर्ता द्वारा बताया गया की आपको अपनी बैठक के प्रस्ताव में इस मुद्दे को शामिल करके एक आवेदन अपनी ग्राम पंचायत को तथा एक आवेदन लालबर्रा लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग के सब इन्जीनियर को लिखित रूप में देना होगा जिसकी एक प्रति मुख्य कार्य पालन अधिकारी लालबर्रा को भी दी जा सकती है।

अतः समूह की महिलाओं ने तीनों विभागों को एक लिखित आवेदन किया गया। परिणाम स्वरूप तीन दिन में उनके मोहल्ले का हेण्डपम्प ठीक कर दिया गया । इतना ही नही समूह की सचिव श्रीमति चितंनबाई गौतम ने हेण्डपम्प सुधरवाने आये मेकेनिक से हेण्डपम्प उपयोग करने के संबध में आवश्यक जानकारियॉ भी प्राप्त की एवं उन जानकारियों को अपने समूह की बैठक में अन्य महिला सदस्यों को भी बताया ।

स्कूल के बच्चों ने छोड़ा व्यसन

परियोजना चौपाल के अंतर्गत संस्था विभिन्न सामूदायिक स्वास्थ्य व्यवहारों में बदलाव पर कार्य कर रही है जिसमें व्यत्गित स्वच्छता व बच्चों में अच्छी आदतों का विकास शामिल है। ऐसा ही एक प्रयास ग्राम कटंगटोला में दिखायी देता है। यहॉ संस्था कार्यकर्ता ने ग्राम पंचायत टेकाड़ी के कटंगटोला के स्कूल में दिनांक 15.11.08 को जाकर बच्चों से चर्चा की एवं उन्हें शारीरिक स्वच्छता जैसे प्रतिदिन नहाना, नाखून साफ करना, बाल धोना, ऑख की सफाई करना, आदि के बारे में बताया गया साथ ही यह भी कि भोजन के पहले व शौच के बाद साबून से हाथ धोना चाहिए, शाला, कक्षा और खेल के मैदान की स्वच्छता, पुस्तक कापी के रख रखाव के बारे में चर्चा की गई बच्चों से चर्चा के दौरान पता चला कि इस स्कूल में कुल 41 बच्चे हैं 13 बच्चे तम्बाकू खाते है बाकी के शेष बच्चे गुटखा, खाते हैं सभी बच्चों ने ईमानदारी से सामने आकर अपना अपना नाम बता दिये ये बच्चे कक्षा 1 से 5 तक के थे जिनकी उम्र सिर्फ 10 वर्ष तक थी। संस्था कार्यकर्ता ने उन्हें बताया कि तम्बाकू गुटखा, खाने से बीमारी जैसे केन्सर होता है दॉतो में सड़न व दर्द होता है अतः वे तम्बाकू, गुटखा नही खायेंगे, 15 दिन बाद संस्था कार्यकर्ता स्कूल में दोबारा गए तो बच्चों से पुनः चर्चा की गई उस दौरान पता चला कि बच्चों ने तम्बाकू, गुटखा खाना नहीं छोडा है वे अब भी नशीले पदार्थ का सेवन करते हैं।

कक्षा पहली की एक छात्रा सरूपा/मंसाराम एक दिन में 10 पाऊच खाती है कुपोषित है इसके घ ार 8 सदस्य है माता–पिता व 6 भाई–बहन, सबसे बड़ी लडकी 13 वर्ष की है जो 20 पाऊच (नशीले पदार्थ) का सेवन करती है चर्चा के दौरान पता चला कि ये सारे बच्चे आदिवासी समाज के हैं इन बच्चों के माता–पिता शराब व तम्बाकू गुटखा खाते हैं जिसके कारण बच्चे भी इन सेवन करते हैं।

पुनः बच्चों को समझाया गया कि उनके माता – पिता मजदूरी करके उन्हें खाना खिलाकर पालते है व पढ़ाते हैं साथ ही उन्हें बताया कि तम्बाकू, गुटखा, खाने से बीमारियॉ फैलती है बच्चों को समझाने के बाद सभी बच्चो ने निर्णय लिया कि अगले दिन से वे तम्बाकू नशीले पदार्थ का सेवन नही करेंगे, इस प्रकार स्कूल के छात्र/छात्राओं ने नशीले पदार्थ का सेवन छोड दिया।

हेमन्त श्रीवास

अंततः समूह बन गया

परियोजना चौपाल के क्रियांवयन के दौरान संस्था कार्यकर्ता गांव के महिला पुरूषो को स्वच्छता, स्वास्थ्य, सरकारी योजनाओं व कानूनो की जानकारी देने के साथ–साथ स्व सहायता समुह बनाने के लिए भी प्रेरित करते हैं ताकि गरीब परिवार की महिलाएँ हर माह कुछ बचत कर समय आने पर समूह से ही वे खुद की मद्द कर सकें।

ग्राम पंचायत चीचंगाव में 2 स्व–सहायता समुह बने हुए थे गरीबी रेखा से उपर जीवन यापन करने वाले लोगों का एकता स्व–सहायता समूह तथा गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले लोगों का पूनम स्व–सहायता समूह जो ठीक से नही चल रहा था समूह की बैठक भी ठीक से नहीं होती थी। 1500 की जनसंख्या में 10–10 सदस्यों के मात्र 2 समूह बने हुए थे कार्यकर्ता द्वारा चींचगॉव में जाकर महिला पुरूषों से मिलकर स्व सहायता समुह बनाने के लिए कहा गया उन्हें बताया गया कि अपने खर्चे से बचत कर स्व सहायता का निर्माण करे ताकि दुःख मुसीबत में समूह से राशि लेकर अपनी समस्या का हल कर सकें । संस्था कार्यकर्ता द्वारा बार–बार समूह बनाने के लिए महिला. ओं एवं पुरूषो को प्रेरित किया गया लेकिन समूह नही बना पुरूषों को प्रेरित किया गया लेकिन फिर भी समूह नही बना कुछ सदस्य तैयार होते तो कुछ नही बार बार समूह बनकर तैयार हुआ खाता नहीं खुला और फिर समूह टूट गया इस प्रकार समुह नही बन पाया ।

बहुत प्रयास करने के पश्चात महिलाओं को समझ आया और ग्राम चीचगांव में महिलाओ ने दो स्व–सहायता समूह का निर्माण किया इस प्रकार कई प्रयासों के बाद महिलाओं ने अपने लिए बचत का समूह बनाया ।

त्रिवेणी बिसेन

सामूदायिक संगठनों की प्रक्रिया बडी जटिल होती है संस्था में कार्यरत स्टॉफ समुदाय के बीच गंभीरता से कार्य करते हैं और इस तरह की सफलताएं उनमें दोगुना उत्साह पैदा करती हैं। संस्था अपने स्टॉफ को इस तरह के प्रयास करने की पूरी स्वतंत्रता देती है जिसमें सीख मिलती हो। दरअसल हर गॉव और समुदाय विशिष्ट तानेबाने से बुना होता है कहीं प्रक्रियाएं सरल होती हैं तो कहीं जटिल। समुदाय में लोगों के भी अपने हित होते हैं और जब उनके हित पूरे होते नहीं दिखायी देते तो वे प्रक्रियाओं को और जटिल बना देते हैं। इस पूरे प्रयास को संस्था एक सीख के रूप में देखती है।

नुक्कड नाटक से मिली प्रेरणा

परियोजना चौपाल द्वारा अक्टूबर 2008 में पीने के पानी का प्रबंधन एवं समग्र स्वच्छता पर जाग्रति हेतु नुक्कड नाटक का आयोजन किया गया। धारावासी ग्राम में 22 अक्टूबर को नुककड नाटक आयोजित किया गया । नाटक देखने गांव के लोगों के साथ वार्ड पंच राजकुमार मानेश्वर, भी पॅहुचे नाटक के माध्यम से संदेश दिया गया कि अधिक समय तक गंदा पानी इकठ्ठा रहने से कीचड होता है और इस पानी में मच्छर मक्खियां, पनपती है। जो आगे चलकर हमारी बीमारी का कारण बनती है और वह पानी के हेण्डपम्प एवं कुओं के पास हो तो और अधिक हानिकारक होता है राजकुमार मानेश्वर को अपने घर के सामने हेण्ड पम्प की स्थिति कुछ ऐसी ही नजर आई। प्रयोग के दौरान हेण्ड पम्प से बेकार बहने वाला पानी सामने फैल कर कीचड एवं गंदगी करता है और गंदा पानी इक्ट्ठा जमा रहता है उन्होंने सोचा कि हम क्यों न इस गंदगी को दूर करें ।

राजकुमार मानेश्वर ने अपने पंचायत प्रतिनिधियों की मासिक बैठक में सरपंच के सामने यह बात रखी और हेण्डपम्प के गंदे पानी के निराकरण हेतु सोख पिट का निर्माण करने का प्रस्ताव रखा सभी की सहमति से निर्णय लिया गया कि वाकई वहॉ के हेण्ड पम्प का पानी मैदान में फैल कर बहुत गंदगी करता है अतः वहां पर सोख पिट होना आवश्यक है । इस तरह पंचायत और सरपंच महोदय के सहयोग से वहॉ पर सोख पिट का निर्माण किया गया ।

हेमन्त श्रीवास

आयोडीनयुक्त नमक : उपयोग पर बनी समझ

21 अक्टूबर 2008 को विश्व आयोडीन दिवस पर आयोडीन नमक के उपयोग पर ध ारावासी पंचायत के ग्राम मौसमी में आयोडीन नमक के उपयोग पर जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन कार्यकर्ताओं द्वारा किया गया ।

कार्यक्रम के आयोजन पर ग्रामीण महिलाओ को गांव की उन्नति स्व सहायता समूह नारी चेतना स्व सहायता समूह शिव शक्ति स्व–सहायता समूह की महिलाओं को एक साथ बुलवाया गया तथा अपने अपने घर से घर में उपयोग किये जाने वाले नमक का सेम्पल साथ में लेकर आने को कहा गया। उपस्थित महिलाओं में 22 महिलाओं ने घर में उपयोग किये जाने वाले नमक का सेम्पल ले कर आयी महिलाओं द्वारा नमक की मात्रा में आयोडीन कितनी मात्रा में इसका परिक्षण किया गया। परी क्षण में केवल 2 महिलाओं के नमक में आयोडीन की सही मात्रा पायी गयी, बाकी महिलाओं द्वारा लाये गये नमक की मात्रा में आयोडीन की मात्रा बिल्कुल ही नहीं थी क्योकि सभी लोग खडे नमक का सेवन करते थे वह भी धोकर कर । नमक को धोकर उपयोग करने से आयोडीन की मात्रा पानी से धुलने से निकल जाती है अतः वे लोग बिना आयोडीन वाला नमक ही इस्तेमाल कर रहे थे ।

उपस्थित महिलाओं को आयोडीन नमक के उपयोग पर बनी एक फिल्म दिखाया गया एवं बताया गया कि आयोडीन की आवश्यकता हमारे शरीर को प्रतिदिन पडती है। जिससे शरीर को ताकत व मानसिक स्फूर्ति प्राप्त होती है। आयोडीन शक्ति एवं बुद्वि का रक्षक है तथा इसकी कमी से मनुष्य को घेंघा रोग होता है खास कर गर्भवती महिलाओं को इसकी आवश्यकता अधिक पडती है आयोडीन की कमी से होने वाली सन्तान मंद बुद्वि व विकलांग होने की संभावना अधिक होती है बच्चों के मानसिक विकास के लिए आयोडीन की आवश्यकता अधिक होती है इस प्रकार चार्ट पोस्टर के सहयोग से परामर्श दिया गया ।

विषय की गंभीरता को महिलाओं ने महसूस किया एवं संकल्प किया कि हम भी अब आयोडीन युक्त नमक का ही इस्तेमाल करेंगे हम लोग बाजार से जब भी नमक खरीद कर लायेंगे उसमें आयोडीन की मात्रा जानने के लिए आगनंबाडी केन्द्र पर रखी आयोडीन नमक जॉच की किट से नमक का परी क्षण करेंगे एवं सही मात्रा पाये जाने पर ही वह नमक इस्तेमाल करेंगे तथा अपने परिवार को आयोडीन की कमी से होने वाले दुषपरिणाम से बचायेंगे ।

श्रमदान

नांदगांव ग्राम पंचायत के अन्तर्गत आने वाले धोबीटोला में आदिवासी समुदाय के 40–50 परिवार निवास करते है धोबीटोला की कुल आबादी लगभग 200 है इस टोले में दो हेण्डपम्प हैं यहॉ निवासरत् सभी परिवार पेयजल के लिए इन्ही दो हेण्डपम्पों के पानी का उपयोग करते हैं ।

हेण्डपम्प के चारो ओर गंदे पानी के निकासी की उचित व्यवस्था न होने के कारण हेण्डपम्प के आस–पास मच्छर व अनेक कीडे मकोडों की बहुतायत थी जिससे यहॉ के परिवार जल जनित बीमारियों उल्टी, दस्त, मलेरिया, खुजली, आदि से बार बार बीमार होते थे इस समस्या के संबंध में संस्था कार्यकर्ता द्वारा वार्ड पंच श्रीमती कंचना मेश्राम से बातचीत की गई तथा उन्हें सुझाव दिया कि अगर वार्ड में सभी लोग मिलकर हेण्डपम्प के आस–पास श्रमदान करें तो गंदगी का सफाया भी हो जाएगा व जल जनित रोगों से बचा भी जा सकता है ।

महिला पंच श्रीमती कंचना मेश्राम द्वारा इस संबंध में संस्था कार्यकर्ता के साथ मिलकर समुदाय के लोग से बात की गई तथा मिलकर हेण्डपम्म परिसर के आसपास सफाई की गई तथा यह तय किया गया कि हर सप्ताह हेण्ड पम्प की सफाई की जायगी व हेण्ड पम्प के पास पानी के उचित निपटारे के लिए सोख गड्डा का निर्माण करवाया जायगा जिससे की हेण्डपम्प के आस–पास गंदा पानी जमा न हो सके तथा वार्ड के सभी परिवारो को हमेशा पीने का शुद्व पानी मिल सके ।

इस प्रकार संस्था कार्यकर्ता व महिला पंच श्रीमती कंचना मेश्राम द्वारा किया गया प्रयास सफल रहा समुदाय में सार्वजनिक पेयजल स्रोत की स्वच्छता के प्रति जागरूकता आयी तथा सभी समुदाय के लोगों को अपने उत्तदायित्वों का अहसास भी हुआ ।

नजमून निशा

समूह ने किया सूचना के अधिकार का प्रयोग

वारासिवनी विकासखण्ड में स्थित ग्राम पंचायत शेरपार है। इस पंचायत के अन्तर्गत मेंदाटोला आता है यह आदिवासी बाहुल्य टोला है। स्वास्थ्य संरक्षक समिति बालाघाट द्वारा आदिवासी महिलाओं को आत्मनिर्भर व जागरूक बनाने के उद्वेश्य के साथ अल्प बचत गोंडवाना स्व सहायता समूह का गठन किया गया है ।

मोदाटोला 30–35 परिवारों से मिलकर बना एक छोटा सा टोला है। यहॉ एक शासकीय प्राथमिक स्कूल है यहॉ 20–21 बच्चे शिक्षा प्राप्त करते हैं। इस प्राथमिक शाला में एक संविदा शिक्षक व एक अतिथि शिक्षक नियुक्त है किन्तु शिक्षकों द्वारा समय समय पर स्कूल न आने व बच्चों को सही माग. ंदर्शन न दे पाने के कारण बच्चे का शैक्षणिक विकास नही हो पा रहा था इस संबंध में गोंडवाना स्व सहायता समूह की महिलाओं द्वारा सूचना का अधिकार कानून के अन्तर्गत शाला में पदस्थ शिक्षक से स्कूल लगने का समय व साप्ताहिक कार्य योजना की जानकारी मांगी, जिस पर स्कूल शिक्षक द्वारा स्पष्ट जानकारी नहीं दी गई इस पर स्व सहायता समूह सदस्यों द्वारा दोनों शिक्षकों की आगामी साप्ताहिक कार्ययोजना बनाई गई व इसकी निगरानी की गई ।

समूह सदस्यों द्वारा सूचना का अधिकार के तहत मांगी गई इस जानकारी की यह बदलाव आया कि शिक्षक द्वारा समय पर शाला लगाई जाने लगी तथा बच्चों के शिक्षा के स्तर से सुधार भी हुआ।

नरेश लॉजेवार

शासन द्वारा ग्रामवासियों को उचित मूल्य पर राशन प्रदान करने के उद्वेश्य से ग्राम स्तर पर सेवा सहकारी समिति गठित की गई है यह समितियॉ चार से पॉच गांव मिलकर बनाई गई जहॉ प्रत्येक कार्डधारी ग्राम वासियों को माह में राशन वितरण किया जाता है ।

वारासिवनी विकासखंड के अन्तर्गत आने वाले कोचेवाही ग्राम में भी एक सेवा सहकारी समिति गठित है इस समिति से ग्राम कोचेवाही, डोरली, शेरपार, के सभी कार्ड धारी हितग्राहियों को राशन वितरण किया जाता है ।

इसी सहकारी समिति से कोचेवाही निवासी श्रीमती देवकी बाई राहंगडाले सितम्बर माह में उनके कार्ड पर आबंटित होने वाले राशन को लेने राशन दुकान पहुॅची तो सेल्समेन द्वारा देविका बाई से कहा गया कि आपने इस माह आने में देरी कर दी है अतः सितम्बर माह का आपको राशन प्रदान नही किया जायेगा चूॅकि स्वास्थ्य संरक्षण समिति कार्यकर्ता द्वारा देविकाबाई को सूचना का अधिकार कानून की जानकारी दी गई थी ।

इसके पश्चात देवकी बाई द्वारा दूसरे दिन सूचना का अधिकार के तहत सेल्समेन से यह पूछा की मेरा पिछले माह का राशन मुझे क्यों नहीं मिल सकता सूचना का अधिकार का उपयोग करते ही सेल्समेन ने तुरन्त देवकी बाई को सितम्बर माह का राशन प्रदान किया गया साथ ही परेशान करने के लिए माफी भी मांगी।

नरेश लॉजेवार

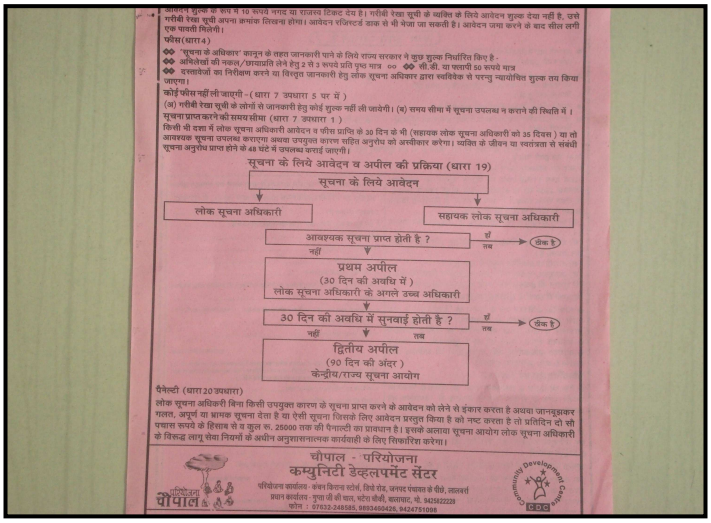

शालेय स्वास्थ्य गतिविधि का प्रभाव

ग्राम पंचायत नादगांव के अन्तर्गत पेदीटोला आदिवासी बाहुल्य एक छोटा सा गॉव है आवश्यक सु खसुविधाओं से विमुख यहॉ के निवासी ठेकेदार द्वारा चलाये जा रही खदान पर काम करके अपनी जीविका चलाते हैं, कुछ परिवार खेती का काम भी करते हैं। यहॉ बच्चों को प्राथमिक शिक्षा प्रदान करने के उद्वेश्य से शासन द्वारा स्कूल भी चलाया जा रहा है। यहॉ टोले के सभी बच्चे पहली से पा. ँचवी तक शिक्षा प्राप्त करते हैं इस शाला में दो शिक्षक हैं। जनवरी 09 से लगभग एक साल पहले स्कूल में स्वास्थ्य व स्वच्छता की स्थिति जो वर्तमान में है वह नहीं थी। आये दिन बच्चों का स्वास्थ्य खराब रहता था जिसके कारण स्कूल में बच्चों की उपस्थिति भी ठीक नही रहती थी। जिससे बच्चों में शिक्षा का स्तर खराब होता जा रहा था हमेशा शालेय प्रांगण व परिसर गंदा व अस्त व्यस्त दिखाई देता था । इस संबंध में स्वास्थ्य संरक्षक समिति बालाघाट द्वारा स्कूल में पदस्थ शिक्षकों व पालक शि क्षक गण से बातचीत की गई जिससे सप्ताह में कम से कम एक बार बच्चों के साथ शारीरिक स्वास्थ्य व स्वच्छता पर बात करना तय किया गया तथा माह में एक बार पालक शिक्षक की बैठक करना तय किया गया जिससे बच्चों के स्वास्थ्य व स्कूल परिसर स्वच्छता स्कूल परिसर के आस–पास असामाजिक गतिविधियों का न होना विषयों को शामिल किया गया ।

इस प्रकार संस्था शिक्षक व पालक शिक्षक सदस्यों द्वारा किये गये सामाजिक प्रयास का यह परिणाम निकला कि 80 से 90 प्रतिशत बच्चे नियमित स्कूल आ रहे हैं। बच्चों का स्वास्थ्य भी अब ठीक रहता है बच्चे नियमित स्नान व साफ कपडों को पहनकर आते हैं। हर कक्षा में खराब चीजों के लिये खराब

पेटी है। कक्षा नायक द्वारा प्रति सप्ताह बच्चों के नाखून की जॉच की जाती है तथा बच्चे मध्यान भोजन के पूर्व स्वच्छ जल से अपना हाथ साफ करते हैं शालेय प्रांगण में बच्चों द्वारा एक बगीचा तैयार किया गया जो काफी सुन्दर दिखाई देता है तथा प्रतिमाह पालक सदस्यों की बैठक हो रही जिसमें पालकों के नये नये सुझावों को शामिल कर शिक्षा के स्तर में सुधार किया जा रहा है।

नरेश लॉजेवार

यहॉ है रोजगार की ग्यारंटी !

केन्द्र सरकार द्वारा चलाई जा रही रोजगार गांरटी योजना जिसके अन्तर्गत ग्राम के प्रत्येक कार्डधारी परिवार को वर्ष में 100 दिन कार्य मिलना तय है । किन्तु कुछ ग्रामो में ग्रामवासियों को योजना की पूर्ण जानकारी न होने के कारण वे इस योजना का लाभ लेने से वंचित रह जाते हैं ।

ऐसा ही एक गांव नगझर है इस ग्राम में 169 परिवार निवास करते है। जिसमें ज्यादातर आदिवासी परिवार है। नांदगॉव ग्राम पंचायत के अन्तर्गत रोजगार गांरटी योजना के अन्तर्गत कार्य तो करवाया गया, किन्तु नगझर ग्राम के कई परिवारों को इस योजना के अन्तर्गत कार्य नहीं मिला इसका कारण यह नहीं था कि पंचायत इन परिवारों को काम नहीं देना चाहती थी बल्कि इन परिवारों को रोजगार गांरटी योजना की पूर्ण जानकारी न होना इसका प्रमुख कारण था ।

21 अक्टूबर 2008 को स्वास्थ्य संरक्षक समिति द्वारा शासन द्वारा चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं की जानकारी देने के उद्वेश्य से सूचना मेला कार्यक्रम का आयोजन किया गया कार्यक्रम में समुदाय को शासन द्वारा चलाई जा रही

विभिन्न योजनाओं की जानकारी दी गई ताकि इन योजनाओं का लाभ किसे किसे प्राप्त होगा यह जानकारी भी दी गईं। इसी के साथ रोजगार गांरटी योजना के अन्तर्गत कितने परिवारों को रोजगार मिला यह जाना गया। समुदाय से मिली प्रतिक्रिया के अनुसार अधिकांश परिवारों को योजना की सही सही जानकारी न होने के कारण कई परिवार इस योजना का लाभ लेने से वंचित रह गये । इस संबंध ा में संस्था कार्यकर्ता द्वारा समुदाय को जानकारी दी गई की रोजगार गांरटी योजना के अन्तर्गत रोजगार प्राप्त करना आपका अधिकार है इसके लिए आप सभी मिलकर पंचायत सचिव को पास आवेदन लगाये तथा आवेदन लगने के 15 दिनो के अंदर यदि रोजगार प्राप्त नहीं होता तो वे पंचायत में रोजगार भत्ता हेतु आवेदन भी लगा सकते हैं । 26 अक्टूॅबर 2008 को नगझर ग्राम के कुछ युवाओं द्वारा मिलकर रोजगार गांरटी योजना के अन्तर्गत रोजगार प्राप्त करने के लिए आवेदन लगाया गया और ठीक एक सप्ताह मे पंचायत द्वारा उन्हें रोड निर्माण कार्य में रोजगार दिया गया।

नरेश लॉजेवार

स्वास्थ्य समिति का छोटा प्रयास

वारासिवनी विकासखण्ड से लगभग 15 किलो मीटर की दूरी पर रमरमा ग्राम है यहॉ आवागमन के लिए यहॉ पक्की सडक भी नहीं है ग्राम के लोगों की आजीविका का मुख्म साधन कृषि व मजदूरी है इस क्षेत्र में कोल माईंस का होना इस क्षेत्र को एक अलग पहचान देता है ।

यहॉ नगझर रोड पर बसे टोले पर हेण्डपम्प है जहॉ ग्राम वासियों द्वारा हेण्डपम्प के पास जानवरों को धोया जाता था। महिलाओं द्वारा वही पास में गंदे कपडे धोए जाते है तथा इसी हेंडपम्प से मो. हल्ले के सभी परिवारो में पानी का उपयोग भी किया जाता था मगर गंदे पानी की निकासी की सही व्यवस्था नहीं होने के कारण वहॉ हेण्डपम्प के आस पास हमेशा गंदगी बनी रहती थी । मोहल्ले में हमेशा कोई ना कोई बीमार रहता था। इस संबंध में हमने ग्राम की स्वास्थ्य समिति की बैठक में यह बात रखी तथा यह समझाया की किस प्रकार हेण्डपम्प के आस–पास गंदगी बनी रहती थी अतः वहॉ अगर स्वास्थ्य समिति द्वारा सोख गड्डा बना दिया जाय तो वहॉ पानी का निपटारा उचित प्रकार से हो जायगा तथा वहा गंदगी भी नही होगी। स्वास्थ्य समिति की बैठक में सभी सदस्यों द्वारा इस विषय पर विचार किया गया तथा फैसला लिया गया कि वहॉ सोख गड्डा बन जाय तो बहुत अच्छा होगा। इस प्रकार वहॉ स्वास्थ्य समिति द्वारा सोख गड्डा निर्माण करवाया गया, गडढ़ा बनने से वहॉ अब गंदगी नहीं होती है और आशा है अब लोग बीमार भी नहीं होंगे।

नजमूननिशा

जरूरत है जागरूकता की,.....

लालबर्रा विकास खण्ड से 20 कि.मी. दूरी पर चिखलाबड्ड़ी ग्राम स्थित है। जो टेकाडी ग्राम पंचायत के अन्तर्गत आता है, जो बैगा बाहुल्य ग्राम है। इस ग्राम में 35–40 परिवार निवास करते हैं। यहॉ की जनसंख्या 192 है। यह जंगल और पहाड़ियों से घिरा हुआ है। निवास करने वाले ग्रामवासियों का जीवन जंगल पर ही आधारित है। महीनों के कुछ ही दिन काम मिलता है वह भी गॉव से 10 कि.मी. की दूर में और भुगतान केवल 30 से 35 रूपये दिन के हिसाब से होता है। यहॉ पर चिकित्सीय सुविधा के लिये भवन का निर्माण तो हुआ किन्तु स्वास्थ्य कर्मचारियों के दर्शन दुर्लभ है। पीड़ित व्यक्ति को लालबर्रा इलाज के लिये जाना होता है और वहॉ तक पहुॅचते पहुॅचते बीमारी विकराल रूप धारण कर लेती है। एक तो काम न होने से गरीबी और थोड़ा जो कमाया है वह इलाज में चला जाता है। शासकीय योजनाओं की पहुॅ च इनसे कोसों दूर है। स्वास्थ्य के प्रति समझाईश मिले यह संभव नहीं है।

शासन के द्वारा की जा रही रोजगार गारंटी के अंतर्गत 100 दिन की बात इनके लिये निरर्थक है, क्योंकि इन्हें तो यह भी नहीं मालूम की ऐसी कोई योजना भी है। गॉव के व्यक्ति मुनाराम मेडावी जिनकी आयु 40 वर्ष है। उन्होंने बताया कि यहॉ रोजगार गारंटी योजना की कोई भी जानकारी हमें मालूम नही और पंचायत कभी इस ग्राम की और ध्यान भी नहीं देती। यह पूछने पर की क्या ग्रामसभा में जाते हो। तो साफ यह कहा नहीं। पूछा कि क्या मुनादी होती हैं। तो जवाब मिला आज तक नहीं हुई। इन जवाबों से यह स्पष्ट होता है कि आज भी ऐसे गांव हैं जहॉ शासन की योजनाओं और सुविधाओं से अछूते हैं। रोजगार न मिलने के कारण एक मात्र रास्ता बचता है वह है पलायन। और परिवार के कुछ सदस्य साल के 3 से 4 महिने के लिये पलायन कर जाते हैं। बचे लोग जड़ी बूटी ,लकड़ियों और बॉस बेचकर अपना जीवन यापन करते हैं। और यह भी निश्चित नही हैं कि यह लगातार कमाई का साधन बना रहे।

आज से लगभग 5 माह पूर्व वन विभाग से रोड़ का काम कराया गया था परन्तु उन्हें आज तक मजदूरी का भुगतान नही हुआ, पूछने पर बताया की वन विभाग कोई जवाब ही नहीं देता। यह भी एक कारण है कि लोग बाहर जाकर काम करना उचित समझते हैं और गांव में काम करने से कतराते हैं। बैठक के दौरान यह भी पाया गया कि यहा पर कोई भी व्यक्ति शिक्षित नही हैं इसी के कारण किसी प्रकार का रोजगार का प्रचार प्रसार को समझ नही पाते हैं । इसलिये यहॉ पर लोगो के द्वारा आवेदन या किसी भी प्रकार की पत्र की समझ नही बनती इसलिये बहुत सी परेशानीयों का सामना करना पडता हैं । वन विभाग के माध्यम से यहा पर कार्य खुलवाने की बात सरपंच महोदय से कही गई और उन्होनें आश्वासन दिया कि वे इन क्षेत्रो में काम खुलवाने की कोशिश करेंगें ।

संस्था कार्यकर्ता के द्वारा चौपाल परियोजना के अंतर्गत जब यहां आम जन के साथ बैठक की गई तो ये सारी बातें सामने आईं। मु ख्य रूप से यह प्रश्न बहुत ही महत्वपूर्ण रहा कि सर्वप्रथम आजीविका को लेकर काम करना आवश्यक है इसके लिये सरपंच से बात की गई। जिसका जवाब भी असंतोशजनक रहा। आवश्यकता है कि यहॉ के ग्रामवासियों के द्वारा ही आवाज उठाई जाये। जिसके लिये संस्था के द्वारा निरंतर प्रयास किये जा रहे हैं।

हेमन्त श्रीवास

आखिर मेरा कसूर क्या है.....?

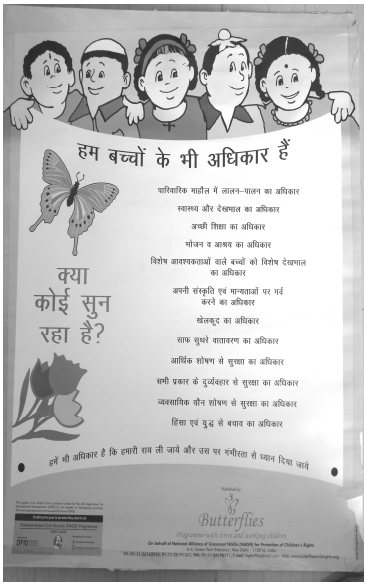

यहॉ अब भी लिंग आधारित भेदभाव देखने को मिलता है। महज लड़के की चाहत में लोगों ने मानवता नाम को भी कोसों पीछे छोड़ दिया है, जहॉ बच्चे के लिए 'मॉ' सबसे पहला शब्द होता है वही दूसरा रूप देखने को मिलता है जो अपने बच्चे को अधिकार से वंचित कर देता है जो बचपन में उसके जीने के लिए आवश्यक होता है।

यह सच्ची घटना है लालबर्रा विकासखण्ड़ के ग्राम चीचगॉव की है, जहॉ स्वास्थ और पोषण दिवस मनाया जा रहा था और स्वास्थ कि हिदायतें दी जा रही थी जैसेः—टिकाकरण, गर्भवती माताओं की देखभाल, नवजात शिशु को मॉ का पहला दूध क्यों आवश्यक है, तभी वहॉ एक बच्ची की मॉ से पूछॉ की आपकी बच्ची तो कमजोर दिख रही है कितने माह की है तो जवाब बड़े धीरे से आया की तीन माह की है। जब आगे बातचीत के दौरान पूछा गया कि बच्ची को मॉ का पहला दूध कितने देर में पिलाना चाहिए तो जवाब आया कि आधे से एक धण्टे के भीतर तो हमें बड़ी खुशी हुई। वहॉ बैठी स्वास्थ कार्यकर्ता व आगंनबाड़ी कार्यकर्ता भी बहुत खुश हुए और उन्होने कहॉ कि इन्हे हम निंरतर गृहभेट के माध्यम से नवजात शिशु कि देखभाल कैसे करे हमने बताया है।

जब इस महिला से आगे बातचीत की आपने अपने बच्चे को कितने देर में पहला दूध पिलाया था तो जवाब आया की दो धण्टे बाद यह सुनकर सभी की ऑखे उसकी तरफ देखने लगी कि जिसने पहले इतनी समझदारी से जवाब दिया उसी ने अपनी बच्ची के साथ ऐसा व्यवहार किया। वहॉ बैठी दोनों कार्यकर्ता उस पर भड़क उठी। तभी उनसे पूछॉ कि जब आपको सब मालूम है फिर भी आपने ऐसा किया तो जवाब आया कि मैं बहुत नाराज हुॅ कि मुझे इस बार भी लड़की हुई इसलिए मैने दूध नहीं पिलाया। हमें भी बड़ा आश्चर्य हुआ और दुख भी कि आज भी लोगों की मानसिकता में कोई सुधार नहीं हुआ है। तब उस महिला को समझाते हुए आपरेशन करवाने कि बात कही जिससे आगे किसी प्रकार समस्या न हो और उसे लाडली लक्ष्मी योजना का फायदा मिल सके और वह बच्ची किसी प्रकार कि बोझ न समझी जाए। परन्तु वह आपरेशन के लिए नही मानी क्योंकि उसे लड़के कि चाह थी। परन्तु यह हमें मालूम था कि अगर अगली बार लडकी हुई तो पता नही उसके साथ क्या होगा। बहुत समझाने के बाद उसके पति को बुलवाया गया और उसके पति को सबके सामने समझाया गया। तब वह दूसरे ही दिन अपने पत्नी का आपरेशन करवाने तैयार हुआ और तुरंत ही स्वास्थ कार्यकर्ता से आवेदन भरवाया गया । और आज वह महिला दोनों बच्चियों के साथ खुश है। और शायद अब उस महिला की लिंग आधारित भेदभाव की मानसिकता नहीं रही।

गॉवों में इस तरह के सामाजिक मुद्दे बहुत हैं जिन पर कार्य करने की आवश्यकता महसूस होती है, हमारा प्रयास होता है कि हम हर उन मुद्दों पर हस्तक्षेप करें जिससे समाज में बदलाव लाया जा सकता है।

हमारे बारे में .....

कम्युनिटी डेव्हलपमेंट सेंटर एक पंजीकृत अलाभकारी स्वैच्छिक संगठन है, जो विभिन्न विकासीय मुद्दों पर कार्य कर रही है। संस्था स्थानीय स्वशासन के सशक्तिकरण पर कार्य कर रही है जिसमें संस्था लोगों की भागीदारी को बढ़ावा देकर समस्याओं के समाधान के स्थानीय उपायों के प्रयोग को बल देती है।

संस्था मुख्यतः प्रशिक्षण, पैरवी, अध्ययन और शोध आदि कार्य करती है, विभिन्न विषयों पर अलग अलग परियोजनाओं के क्रियांवयन के फलस्वरूप संस्था लोगों के सामाजिक आर्थिक विकास के कार्य संस्था

द्वारा किये जाते हैं।

Community Development Centre
Opposite Maharishi Vidya Mandir
Near Lodhi Hostel, Bhatera,
Balaghat M.P. 481 001 India
Phone : 09406720690
Email : cdcindia@rediffmail.com
Website : www.cdcmp.org

Partner organization

SWASTHYA SANRAKSHAK SAMITI

Near Railway Crossing
Budhi Balaghat M.P. 481 001
Cell No. 09424924213